प्राकृतिक धर्म

(Naturalistic Religion)

प्रारम्भिक धर्म (Primitive religion) असभ्य एवं अशिक्षित व्यक्तियों का धर्म होने के कारण अत्यन्त ही संकुचित था। इस धर्म में अनेक त्रुटियाँ सन्निहित थीं। एक टोली का सदस्य ईश्वर के विचार को लेकर अन्य टोली के सदस्यों से भिन्न था। प्रत्येक टोली भिन्न-भिन्न ईश्वर की आराधना करती थी। फलतः लोगों में विरोध तथा फूट का भाव विकसित हुआ।

सभ्यता के विकास के साथ ही साथ मनुष्य इस जीवन को अप्रिय समझने लगा क्योंकि उसमें नैतिकता का अभाव था। एक ऐसे सूत्र का अभाव था जो संसार के समस्त व्यक्तियों में अपनापन का भाव जागृत करता। प्राकृतिक धर्म इस अभाव की पूर्ति कहा जा सकता है।

प्राकृतिक धर्म, प्राकृतिक वस्तुओं की आराधना में विश्वास करता है। यह बात प्राकृतिक धर्म के नाम से ही स्पष्ट हो जाती है। इस धर्म में समस्त प्रकृति पूजा का विषय बन जाती है। सूर्य, चन्द्रमा, तारे, पृथ्वी, जल, प्रकाश इत्यादि विशेष रूप से आराधना के विषय दीख पड़ते हैं। प्राकृतिक वस्तुओं को देखकर मानव श्रद्धा और आदर का भाव व्यक्त करता है। अतः प्राकृतिक धर्म ईश्वर को प्रकृति के रूप में ग्रहण करता है।

इस धर्म में सारा विश्व एक नियम के अन्तर्गत संचालित होता है। जिस नियम से यह जगत् संचालित होता है उसे प्राकृतिक नियम कहा जाता है। यह नियम अचल एवं अटल है। इस नियम के विरुद्ध एक पत्ता भी हिल-डोल नहीं सकता है।

"प्राकृतिक धर्म के भिन्न-भिन्न उदाहरण"

(Different Examples of Naturalistic Religion)

प्राकृतिक धर्म का सर्वप्रथम उदाहरण स्पीनोजा का दर्शन है। स्पीनोजा के अनुसार द्रव्य ही चरम सत्ता है। द्रव्य को स्पीनोजा ने ईश्वर तथा प्रकृति कहा। ईश्वर और प्रकृति एक ही सत्ता के दो भिन्न-भिन्न नाम हैं। स्पीनोजा को कुछ विद्वानों ने प्राकृतिक दार्शनिक (Natural Philosopher) कहा है क्योंकि उन्होंने प्रकृति और ईश्वर के बीच कुछ भी भेद नहीं माना है। स्पीनोजा के अनुसार "यह जगत् ही ईश्वर है और ईश्वर ही जगत् है।"

जब ईश्वर को विश्व के कारण के रूप में माना जाता है तो ईश्वर को विश्वात्मरूप (Natura Naturans) और जब ईश्वर को विश्वरूपी कार्य के रूप में समझा जाता है तो उन्हें विश्वरूप (Natura Naturata) कहा जाता है। इस प्रकार स्पीनोजा के दर्शन में प्रकृति अत्यन्त ही मुख्य प्रत्यय है। ईश्वर में व्यक्तित्व का अभाव है। वह निर्गुण

Scanned with CamScanner

और निराकार है। संसार की प्रत्येक घटना नियत एवं निश्चित (Determined) है क्योंकि किसी भी वस्तु में स्वतन्त्रता नहीं है। स्पीनोजा के अनुसार विचार स्वातंत्र्य का मानव में अभाव है।

इस धर्म का दूसरा उदाहरण चीन में प्राप्त होता है। चीन में टायो (Tao) आराधना का विषय है। टायो (Tao) का अर्थ होता है। संसार की व्यवस्था का कारण इसी सत्ता को ठहराया जाता है। सम्पूर्ण आचारशास्त्र के तत्त्वों का विकास इसी से हुआ है। मुख्यतः चार तत्त्वों का जैसे (१) ज्ञान (Wisdom), (२) मानव प्रेम (Love of man), (३) न्याय (Justice), (४) रीतियों का प्रत्यक्षीकरण (Observation of all ceremonies), का उद्भव टायो (Tao) से हुआ है। ईश्वर सभी विषयों पर शासन नियमानुकूल करता है। मानव के किसी भी क्षेत्र में अराजकता का कारण धर्म का गलत प्रयोग है।

प्राकृतिक धर्म का तीसरा उदाहरण बेबिलोनिया के धर्म में मिलता हैं। यहाँ के लोग ईश्वर को त्रिमूर्ति मानते थे। स्वर्ग, पृथ्वी तथा सागर के देवताओं की त्रिमूर्तियाँ ही आराधना के विषय थे। अणु-बेल-एण्ड-एआ (Anu Bel and Ea), स्वर्ग, पृथ्वी तथा सागर के देवताओं को कहा जाता था। समय के साथ-साथ यहाँ के लोगों ने इन्हीं त्रिमूर्त्तियों में विश्वास करना अनुपयुक्त समझा। मारडक (Marduk) को ही जनता ने ईश्वर माना। मारडक ईश्वर को मानने के बावजूद यहाँ के लोगों में त्रिमूर्त्ति-ईश्वर (Trinity of God) की भावना विद्यमान थी।

इजीप्ट में इस धर्म का चौथा उदाहरण पाते हैं। इस धर्म में रा (Ra) की आराधना का विषय माना जाता था। 'रा' सूर्य का ही दूसरा नाम था। फराव (Pharaoh) रा का पुत्र है जिसे वहाँ के लोगों ने सूर्य देव (Sun-God) की संज्ञा से विभूषित की। यहाँ के लोगों ने एक ऐसे ईश्वर की कल्पना की जिसे अमण रा (Amon Ra) कहा जाता है। यह एक ऐसी शक्ति है जिसके द्वारा समस्त संसार का निर्माण हो पाया है। लोगों की यह धारणा है कि अमण रा की आँखों से मानव का विकास हुआ है। सृष्टि के सम्बन्ध में कहा जाता है कि वह स्वतः अपनी सृष्टि करती है।

भारतवर्ष में भी प्राकृतिक धर्म के कुछ उदाहरण हम पाते हैं। वेद में सम्पूर्ण प्रकृति उपासना का विषय दीख पड़ती है। वैदिक काल के लोग सूर्य, चन्द्रमा, तारे, आकाश इत्यादि प्राकृतिक शक्तियों को पूजते थे।

आकाश को वेद में 'वरुण' कहा गया है क्योंकि आकाश सम्पूर्ण पृथ्वी को ढके हुए है। वैदिक काल के ऋषियों ऋत (Rta) को सार्वभौम नियम के रूप में माना था। संसार की व्यवस्था का कारण ऋत (Rta) को ठहराया जाता है।

कुछ लोगों के अनुसार भारतीय दर्शन में सांख्य प्राकृतिक धर्म का दूसरा उदाहरण है। सांख्य प्रकृति और पुरुष के द्वैत में विश्वास करता है। प्रकृति अचेतन, एक, त्रिगुणमयी इत्यादि है। संसार की प्रत्येक वस्तु का विकास प्रकृति से ही सम्पन्न हुआ है। परन्तु इन

Scanned with CamScanner

गुणों के बावजूद सांख्य प्राकृतिक धर्म का सफल उदाहरण नहीं है क्योंकि प्रकृति ईश्वर का रूप नहीं है। अतः यह विचार अमान्य प्रतीत होता है।

प्राकृतिक धर्म (Naturalistic religion) को कुछ विद्वानों ने राष्ट्रीय धर्म (National religion) कहा है। इस धर्म को राष्ट्रीय धर्म इसलिए कहा जाता है क्योंकि इस धर्म का विकास किसी गिरोह से न होकर राष्ट्र (Nation) में होता है। टोली-जीवन (Tribal life) की अनेक कठिनाइओं को देखकर अनेक टोली के लोगों ने राष्ट्र का निर्माण किया। राष्ट्र अनेक टोली का योगफल था। प्राकृतिक धर्म का विकास तब होता है जब मानव राष्ट्र का सदस्य होकर जीवन यापन करता है। अतः प्राकृतिक धर्म को राष्ट्रीय धर्म कहना बिल्कुल युक्तिसंगत है।

प्राकृतिक धर्म की विशेषताएँ

इस धर्म की पहली विशेषता यह है कि यह समस्त विश्व को शक्ति (Power) का प्रतीक मानता है। शक्ति (Power) ही सृष्टि का आधार है। टी० एच० हक्सले (T. H. Huxley) आरम्भ से अन्त तक सृष्टि की व्याख्या शक्ति से करते हैं। नीट्से संसार को शक्तिपूंज मानते हैं। ब्रटेन्डरसेल एक शक्तिप्रवाह पर विश्वास करना आवश्यक समझता है।

फिर इस धर्म के माननेवालों ने संसार को व्यवस्थापूर्ण माना है। विश्व में व्यवस्था है— इसे अस्वीकार करना कठिन है। चीन में टाओ (Tao) को व्यवस्था का प्रतिरूप मानते हैं। बेबीलोनिया के लोगों ने भी व्यवस्था में विश्वास किया है। भारत के वैदिक ऋषियों ने ऋत (Rat) को मानकर संसार के सामन्जस्य की व्याख्या की है।

इस धर्म की तीसरी विशेषता यह है कि इनके माननेवालों ने लय (Rhythm) के आधार पर संसार की व्याख्या की है। लय गति का अर्थ है कि संसार नियमित है। जाड़े के बाद गर्मी, रात के बाद दिन, दिन के बाद रात का आना इसका सबूत कहा जा सकता है।

धार्मिक आचरण तथा धार्मिक जीवन में विश्वास करना इस धर्म की चौथी विशेषता है। इस धर्म में प्रार्थना पर अत्यधिक जोर दिया गया है। गीता-स्तुति से ईश्वर को प्रणाम करना इस धर्म में विश्वास करनेवाले लोगों का आवश्यक अंग रहा है। इसके अतिरिक्त धार्मिक उत्सवों के अवसर पर नाच, जुलूस का आयोजन दीख पड़ता है। देवताओं को खुश करने के लिए पशुओं का बलिदान करना आवश्यक समझा जाता है। इसके अतिरिक्त फल, अन्न भी देवताओं को प्रदान किये जाते हैं।

प्राकृतिक धर्म में नैतिकता की प्रधानता भी स्पष्टतः दीख पड़ती है। देवताओं के ऊपर विभिन्न धर्मों (Virtues) का आरोपन होता है। इन्द्र को वीरता नामक धर्म से घोषित किया जाता है, वरुण को न्याय, एथीने (Athene) को ज्ञान, हेस्टिया (Hestia) को पवित्रता नामक धर्म से विभूषित किया जाता है।

इस धर्म की छठी विशेषता यह है कि यह धर्म बहुदेववाद (Polytheism) से पूर्ण है। प्राकृतिक धर्म में देवताओं को एक के विपरीत अनेक माना गया है। इस प्रकार

Scanned with CamScanner